ऊपर पहाड़ों पर

सिंथिया, चित्र : डायना, हिंदी : विदूषक

ऊपर पहाड़ों पर

सिंथिया, चित्र : डायना, हिंदी : विदूषक

जब मैं बहुत छोटी थी तो पहाड़ों पर रहती थी. जब शाम को दादाजी घर आते थे तो वो पूरी तरह से कोयले की काली धूल से लदे होते थे. सिर्फ उनके ओंठ साफ़ होते थे. अपने साफ़ ओंठों से वो मेरे सिर को चूमते थे.

जब मैं बहुत छोटी थी और पहाड़ों पर रहती थी तब दादी मेज़ पर मक्के की गर्म ब्रेड, बीन्स और तली हुई भिन्डी की सब्जी रखती थीं.

बाद में लगभग आधी रात को वो मुझे घास पर चलती हुई शौचालय ले गईं. उसके बाद से मैंने बहुत ज्यादा भिन्डी न खाने की कसम खाई.

जब मैं बहुत छोटी थी और पहाड़ों पर रहती थी तब हम हरे घास के मैदानों और जंगलों में अपनी तौलिए लेकर घूमते थे. वहां पर एक गड्ढे में पानी था. पानी थोड़ा मटमैला था, और कभी-कभी हमें वहां छोटे सांप भी दिखते थे. पर फिर भी हम गड्ढे में कूदते थे.

लौटे वक्त हम मिस्टर क्राफोर्ड की दुकान से सफ़ेद मक्खन खरीदते हे. मिस्टर और मिसेज़ क्राफोर्ड देखने में बिल्कुल एक-जैसे लगते थे और उनसे हमेशा मीठे दूध की खुशबू आती थी.

DR. PRICE'S
CREAM
BAKING
POWDER

जब मैं बहुत छोटी थी और पहाड़ों पर रहती थी तब हम पम्प द्वारा कुएं में से कई बाल्टी पानी निकालते थे. यह कुआँ पहाड़ी के नीचे स्थित था. फिर हम पानी को एक बड़े हौद में डालकर उसे नहाने के लिए गर्म करते थे.

जब हम ठंड में काले चूल्हे के सामने ठिठुरते और हुए आग सेंकते थे तब दादी हमें गरमा-गर्म कोको पीने को देती थीं.

जब मैं बहुत छोटी थी और पहाड़ों पर रहती थी तब हम हर रविवार को स्कूल के पास के चर्च में जाते थे. फिर कभी-कभी चर्च में आए सभी लोग उस स्विमिंग-पूल के गड्ढे के पास किसी धार्मिक समारोह के लिए जाते थे.

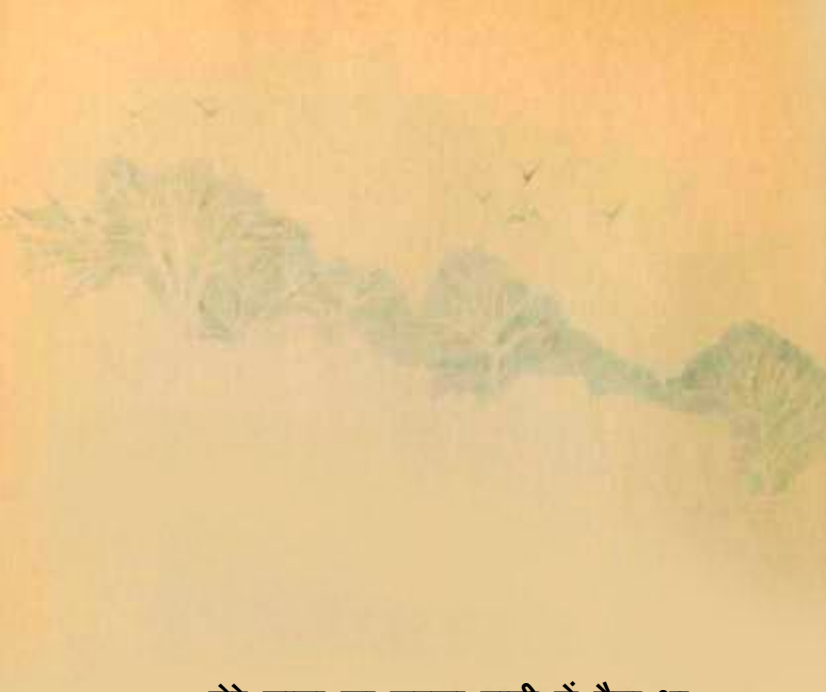

मेरे चाचा का लड़का पानी में बैठा था. उसकी सफ़ेद गीली कमीज़ उसके शरीर से चिपकी थी और दादी रो रही थीं.

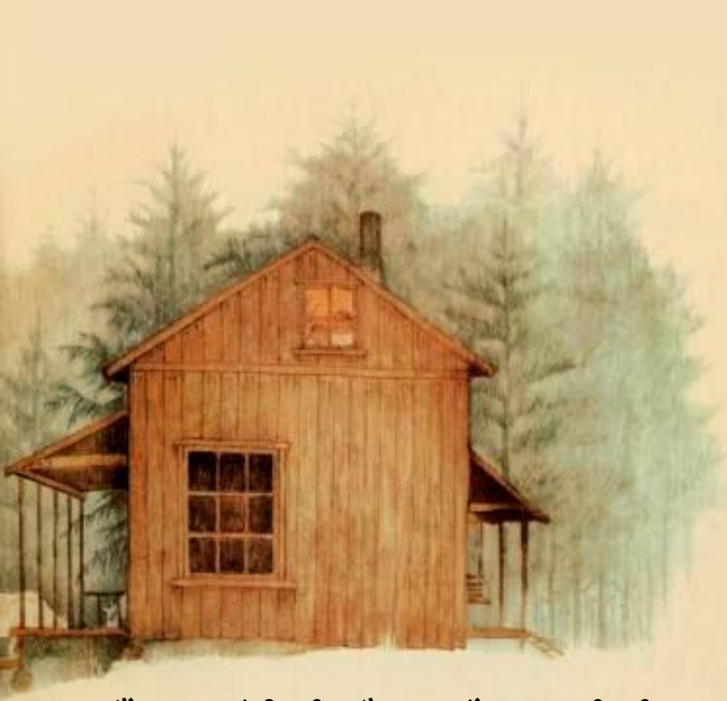

जब मैं बहुत छोटी थी और पहाड़ों पर रहती थी तब हम शाम के समय मेंढ़कों का संगीत सुनते थे और सुबह-सुबह गाय के गले में बंधी घंटियों की आवाज़ सुनकर उठते थे. कभी-कभी जब कोई काला सांप हमारे खलियान में आता तब दादी उसे बेलचे से डरा कर भागती थीं.

अगर सांप नहीं भागता तो दादी उसे बेलचे से मार देती थीं. एक बार हम चार बच्चों ने एक मरे और बड़े लम्बे सांप को फोटो के लिए अपने गलों में लटकाया.

TRAVELING

जब मैं बहुत छोटी थी और पहाड़ों पर रहती थी तब हम शाम के समय बरामदे में झूला झूलते थे. तब दादाजी अपने पॉकेट चाकू से मेरी स्कूल की पेंसिलों की नोक बनाते थे. और दादी कभी बीन्स छीलती थीं तो कभी मेरी चोटियाँ बनाती थीं. हमारे आसपास कुत्ते लेटे रहते थे और आसमान में तारें चमकते थे. जंगल में चिड़ियें चहचहाती थीं.

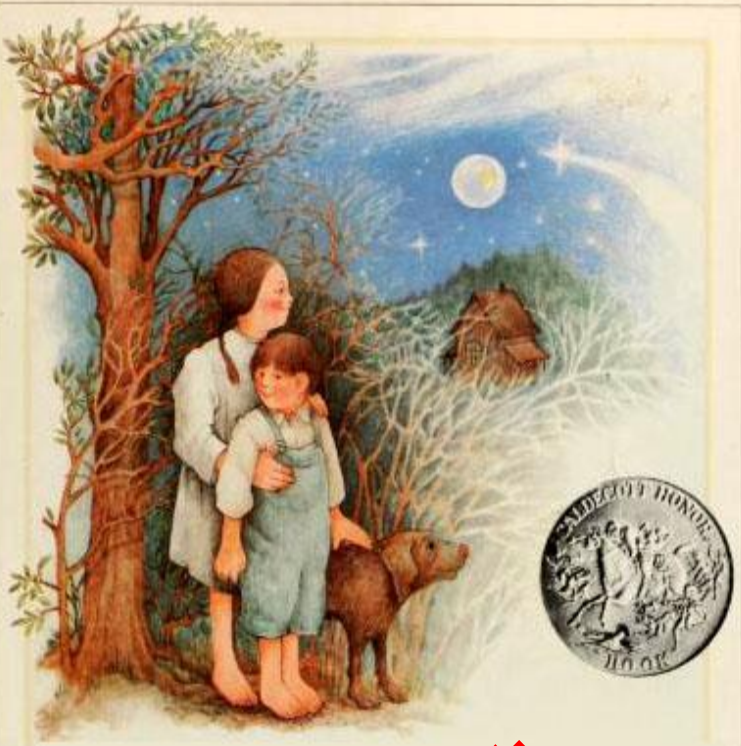

ऊपर पहाड़ों पर

सिंथिया, चित्र : डायना, हिंदी : विदूषक